International Journal of Applied Research 2017; 3(2): 204-209

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(2): 204-209
www.allresearchjournal.com
Received: 02-12-2016
Accepted: 03-01-2017

डॉ. उत्तम पटेल
एसोसियेट प्रोफेसर एवम् अध्यक्ष, हिंदी विभाग, श्री वनराज आर्ट्स एण्ड कॉमर्स कॉलेज, धरमपुर, जिला.वलसाड, (गुजरात)

Correspondence
डॉ. उत्तम पटेल
एसोसियेट प्रोफेसर एवम् अध्यक्ष, हिंदी विभाग, श्री वनराज आर्ट्स एण्ड कॉमर्स कॉलेज, धरमपुर, जिला.वलसाड, (गुजरात)

काली दीवार की सखिया

डॉ. उत्तम पटेल

सार
केशवप्रसाद मिश्र हिंदी के प्रसिद्ध कथाकार हैं। इनके 'काली दीवार', 'महुआ और साँप', 'कोहबर की शर्त', 'देहरी के आर-पार', 'गंगाजल' तथा 'क्या रोशनी मौत है' प्रसिद्ध उपन्यास हैं। ये एक आँचलिक कथाकार हैं। इनके 'कोहबर की शर्त'उपन्यास पर से 'नदिया के पार' और 'हम आपके हैं कौन' जैसी सुंदर फिल्मों का निर्माण हो चुका है। इनके उपन्यासों से धरती की सोंधी सुगंध आती है। इनकी सभी रचनाएँ सांवेदिकता से पाठक को सराबोर कर देती हैं। किन्तु फिर भी हिंदी आलोचक केशवप्रसाद मिश्र की और उदासीन ही रहे हैं। केशवप्रसाद मिश्र के उपन्यास संवेदना से भरपूर हैं। 'काली दीवार' की सखिया इसका श्रेष्ठ उदाहरण है।

कूट शब्द - बच्चन, समर्पिता, संवेदनशील, त्यक्ता, स्वकीया, आदर्श नारी

प्रस्तावना
'काली दीवार' केशवप्रसाद मिश्र का पहला उपन्यास है। उपन्यास में मुख्य कथा बच्चन-सखिया की है। बच्चन-सखिया नायक-नायिका के रूप में उभरते नज़र आते हैं। इनके अतिरिक्त बहुआ, कोट साहब, रामबचन, ठनठन तिवारीमुख्य पात्र हैं तो सत्या, पांडे, लुटावन, सुरेश, कमला,गनपति मिश्र,छोटे मियाँ, मुंशी मरखहा लल्लूलाल, शरद, कोट साहब की मझली बहू, तिवारी काका, उदार पोतना बुआ, पड़ाईन चाची, सत्या की बहन सरला, ठनठन की पत्नी, प्रेमा, पहाड़ी नौकर रतनसिंह, ठनठन की नयी पत्नी, रामलाल, बिरजू, परमेश्वर आदि गौण पात्र के रूप में अपना अलग स्थान रखते हैं।

सखिया 'काली दीवार' उपन्यास की नायिका व मुख्य स्त्री पात्र है। लेखक नौकरानी की बेटी, सखिया का परिचय इस प्रकार देते हैं- "पंद्रह सोलह साल की सखिया, हर ओर से भरी पूरी देह, माँग में सिन्दूर और माथे पर इंगुर का बड़ा-सा लाल टीका, देह पर रंगीन साड़ी और चाल में एकदम अल्हड़पन। रूप रंग देख कर, बड़े घर भर की बेटी होने का किसी को भी भ्रम होना सहज था। व्यक्तित्व का ऐसा आकर्षण छोटी जाति की लड़कियों में प्रायः नहीं होता। छोटे कुल में जन्मने के बावजूद सखिया के सारे लक्षण निश्चय ही किसी बड़े घर की बेटी के थे।"[1]

सखिया सुंदर है। लेखक सखिया का रूप-वर्णन इस प्रकार करते हैं-".

"..साँवरे घने केशों के बीच वाली माँग में सिन्दूर की रेखा, माथे पर रोली का बड़ा-सा गोल गोरोचन, कानों में सोने के झुमके, नाक में सोने की कील का चमकता हुआ नग और मुस्कराने से खिली हुई धवल दाँतों की कतार, उभरी हुई छाती पर तने हुए ठोस वक्ष और देह पर सदा की भाँति महीन सफेद साड़ी।"[2]

इसके बारे में सत्या का कहती है-"...तेरे इस अपार रूप को देने वाले सैंकडों तैयार होंगे, ये तेरी आम की फाँक-सी आँखें, गोरी-चिकनी लयनू सी देह, देह के उभरे हुए अंग..."[3] जिससे सत्या के मन में भी डाह उत्पन्न होती है- सखिया के यह कहने पर कि "औरत का रूप औरत को भला मोहता है।", वह कहती है-"मोह भले न, पर डाह तो पैदा करता ही है, कभी-कभी मेरे मन में भी...।"[4]

सखिया त्यक्ता नारी है। ससुराल न जाने के बारे में सखिया सत्या से कहती है-"मेरी बात पूछती हो कि मैं ससुराल क्यों नहीं जाती। मैं वह भी बताती हूँ कि भगवान जैसे को तैसा नहीं देता क्योंकि तुम दोनों की जोड़ी मेरे सामने है। लेकिन अपना ब्याह हुआ तो अपने अधबूढ़े और कलूटे मर्द को देख कर, मन में यही आया कि भगवान में मेरे साथ न्याय नहीं किया, फिर जिस घर में पेट न भरे, उसमें कब तक रहा जाये। खुद कमा के लायेगा नहीं, मुझे कमाने के लिए निकलने नहीं देगा, निकलने पर पचास लांछन लगायेगा, यह सब कब तक सहा जाता?"[5]

अपने पति के बारे में वह कहती है- "हम लोग छोटी जाति के हैं। अगर वह मुझे ले जाने पर तुल ही जाता तो मुझे जाना ही पड़ता। लेकिन वह चाहता कैसे, वह तो भौजाई से फँसा था।"[6] फिर भी पति छोड़ने का उसे पाप-बोध है।

सखिया को बच्चन से प्यार है। बच्चन आने वाला है, सुन सखिया का मन खिल जाता है। माँ के सिर में तेल डालती हुई बच्चन के ख्यालों में खो जाती है। सुरेश भी सखिया से छेड़खानी करते हुए कहता है-"चकिया। आज बहुत खुच है बच्चन आयेगा।"[7] बच्चन के सिगरेट के पैसा लाने के कहने पर सखिया इसकी शिकायत बहुआ से करने को कहती है - "तनिक सी बात में लाल पीले, सिगरेट पीये बिना रहा नहीं जाता, लौट के आओ तो आज बहुआ से कहती हूँ।"[8]

बच्चन के रामबचन के घर खाना लेकर जाने पर उनकी पत्नी द्वारा स्वीकार लेने पर रामबचन की पत्नी पर सखिया द्वारा ताना कसने पर कि "सलोना देवर देखा, खट्ट् से राजी। तो रामबचन की पत्नी का यह कथन- इसी सलोने देवर पर तो तन, मन, देश-दुनियाँ की सुधि-बुधि बिसार बैठी है रे हरामजादी, मुझी से ठिठोली करती है।" बच्चन–सखिया की जोड़ी को देखकर रामबचन की पत्नी कहती है- "क्या जोड़ी रुच रही है-राम-सीता की।"9 सखिया का बच्चन के प्रति प्यार देखकर ही तो सत्या बच्चन से कहती है- "तुम्हारी चिंता मुझसे अधिक तो वह करती है।"[10] बच्चन के प्रति प्यार के कारण ही तो सत्या सखिया को 'मेरी सौत' कहती है।[11] मैनावाली की बात को लेकर नींद न आने पर बच्चन के पास चली जाती है और बच्चन द्वारा उँगली पकडकर उसे खाट पर खींचने पर वह मना नहीं करती।

सखिया एक निष्ठ समर्पिता नारी है। बच्चन से उसका यह कहना-". मैं तो तुम्हारे लिए सोचती हूँ। अपने लिए तो बस गिरधर गोपाल, दूसरा न कोई, अब तो बात फैल गयी, कहा करे कोई।"[12] -इसका सबसे बड़ा प्रमाण है। प्यार के कारण ही तो बच्चन के जेल जाने पर श्रृंगार नहीं करती। बच्चन के ढाई साल के बाद वापस आने पर "तेरी देह की हालत कैसी हो रही है"-पूछने पर वह कहती है- "का पर करती मैं सिंगार...पिया मोर आन्हर।"[13]

जब कि बच्चन के जेल से छूटकर आने पर नहा-धो कर, साफ धुले कपड़े पहन, माथे पर ईगुर का बड़ा-सा लाल टीका करती है। जिसे देखकर घर की स्त्रियाँ भी कहती हैं- "आ गया देवर, सखिया ने रंग बदल दिया।"[14]

बहुआ को प्रसन्न रखने में सखिया बेहद कुशल है। इसी लिए तो बहुआ सखिया से कहती है-"...तेरी जैसी पतोहू से पता नहीं कैसे, हरामजादी सास का मन नहीं भरा।"[15]

सखिया भाग्यवादी है। ससुराल छोडने की बात पर बहुआ से कहती है-"सबके नसीब में सब नहीं मिलता बहुआ। कुछ तो सहना ही पड़ता है। रही दिन कटने की बात तो तुम लोग तो हो ही। भगवान जैसे रखेंगे तुम लोगों के सहारे दिन तो कट ही जायेंगे?"[16]

सखिया एक कर्मठ नारी है। वह पकवा मकान, दादा आदि के यहाँ काम करती है। कपड़े भीग जाने पर भी काम नहीं छोडती। वह कर्म से महान है। सत्या के यह कहने पर कि "फिर वह लड़की जो पकवा मकान जैसे घर में पली हो।" वह कहती है-"हाँ, खास बात यही थी, मैनावाली, छोटी जाति में जन्मी जरूर, लेकिन कर्म कभी छोटा नहीं किया और न अब तक कभी किसी छोटे का मुँह देखा है।"[17]

सखिया कभी-कभी लड़कपन भी कर बैठती है। बच्चन आनेवाला है जानकर बहुआ से कहती है कि "देखती हूँ मेरे लिए क्या लाते हैं।" वह कभी-कभार छेड़खानी करती है। मन बहलाव के लिए सखिया भी कभी कभी, पानी भरते समय एक आध चुल्लू पानी सुरेश की देह पर उछाल देती। जिससे सुरेश गद् गद् हो नीचे देखते हुए मुस्कराने लगता है। पकवा मकान में रख कर उसने संस्कार ग्रहण कर लिए हैं। बच्चन जब घर आता है तो सभी के पैर छूता है तो सखिया बच्चन के पैर छूती है।

सखिया बहुत संवेदी है। सत्यनारायण की कथा के समय थोड़े समय सुनने के बाद चले आने पर सखिया बच्चन से कहती है- "हमेशा अपने मन की करते हो, थोड़ी देर सामने बैठने का मौका मिला तो भाग आये।"[18] - पर बच्चन के यह कहने पर कि "तेरे कारण तो नाक में दम है" - वह कहती है- "यह तो मैं जानती हूँ, लेकिन तुम्हारे कारण जो स देह में दम है उसका मैं क्या करूँ?"[19] बच्चन से प्यार है अतः दीपावली पर दीए जलाते हुए बच्चन से कहती है-"...और न जाने एक मेरा पापी मन कैसा है जो तुम्हें देखने से अघाता ही नहीं। पता नहीं मैंने उस जनम में कौन-सी चूक की थी जो भगवान ने तुम्हें मुझसे इतना दूर रख दिया।"[20] दीए की ज्योति में बच्चन का मुँह निहारती रोम-रोम शिरा-शिरा से आकंठ तृप्त हो जाती है। बच्चन के सुराजी होने के कारण पकड़े जाकर, जेल जाने पर सोचती है- " जिसे कपड़े लत्तों, खाने-पीने, नहाने-धोने की सुधि रखने की आदत नहीं, वह जेल में कैसे रहेगा? ...लोग कहते हैं पुलिस वाले मारते-पीटते भी हैं। ऐसी देह पर डंडों की मार!...पानी की दो बड़ी-बड़ी बूँदें छड पकड़े हुए दोनों हाथों पर टप-टप गिरीं।"[21]

सत्या द्वारा स्वयं को रखैल कहने पर उसका कहना कि "मुझे जो कुछ भी कहोगी, दुःख न होगा मैनावाली, लेकिन तुम्हारे कारण यदि उनको दुख होगा तो तुम्हारा कहीं भी भला नहीं होगा।"[22] - उसके नम्र हृदय का सूचक है।

सखिया–बच्चन के संबंध को जानकर सत्या सखिया के यह पूछने पर कि कलकत्ते से मेरे लिए क्या लायी है, कहती है, "तेरे लिए तो इतनी बढ़िया चीज़ छोड़ गयी थी।"[23] सखिया के लाल रंगवाली साड़ी निकालने पर सत्या कहती है- "तेरे यार को, यही रंग पसंद है!"[24] सत्या का यह सोचना कि "वह पहले बच्चन की है।"[25] बच्चन की वह सबसे विश्वसनीय है। अतः सत्या पर संदेह होने पर बच्चन सखिया से कहता है कि "इनके नाम आने वाली चिट्ठियों पर निगाह रखना।"[26]

इस उपन्यास में सखिया के लिए 'रानी' [27], 'चकिया' [28], 'हरामजादी', 'देहात की लड़की' [29], 'पकवा मकान की परिचारिका' [30], 'रखैल' [31] आदि विशेषणों का प्रयोग हुआ है।

यह दूरदर्शी भी है। सत्या की चिट्ठी पढ़ने के बाद सोचती है कि यह बच्चन को न पढ़ाना मैनावाली के हित में है किन्तु बच्चन का विश्वास वह नहीं तोड़ना चाहती तो दूसरी और चिट्ठी वह सत्या को पढवाना चाहती है ताकि उसका मन फिर जाये।

सत्या मेल-जोलवाली है। बच्चन के इलाहाबाद जाने के बाद सत्या से अपने अच्छे स्वभाव के चलते ही वह उसका मन जीत लेती है जिससे सखिया रात को भी सत्यावाले कमरे में सोने लगती है। वह मैनावाली की परिचारिका और सखी दोनों हो जाती है।

वह मन की पारखी है। सत्या के मन के भावों को चिट्ठी आने पर परखती है। सत्या की चिट्ठी अपने पास रखकर भी उसे पता नहीं लगने देती।

वह मजबूर भी है। सत्या के यह कहने पर कि "मैं तेरे बारे में सबकुछ जानती हूँ", उसका कहना-"मेरा कोई दूसरा ठिकाना नहीं है मैनावाली, मुझ पर दया रखना, ऐसा न हो कि मेरा इस घर में आना-जाना बंद हो जाये।"32

पकवा मकान के परिवार का वह अंग है। जो चाचा, दादा की जमीन में ये बसी हुई हैं।

उसमें व्यावहारिकता है। बच्चन के आने पर सत्या के पास से सरक जाती है। बच्चन द्वारा सत्या को संभोग करने पर, दरवाजे खुले देखने पर सत्या द्वारा यह कहने पर कि "दरवाजा एकदम खुला था, सखिया आ जाती तो।", बच्चन का यह कथन-"सखिया को एकदम से बेवकूफ समझ लिया है क्या?"[33] तब सत्या भी कहती है- "अरे बाप रे! कौन कहता है! उसे तो सिखा पढ़ा कर तुमने पहले ही पक्का कर रखा है। यह सब मैं जानती हूँ।"[34] व्यावहारिकता के कारण ही वह सत्या से कहती है-"जिन्दगी में औरत भला कहाँ हार मानती है फिर उस मर्द से जिसके लिए मन में कभी नेह-छोह रहा हो।"[35] यह सुनकर सत्या का का यह कथन-"तू ठीक कहती है। राजा बुद्धि से राज करता है, उसकी रानी कहलाने के लिए औरत के पास गुण होने चाहिए। यह सब कुछ अभी तुम्हें सखिया से सीखना होगा। किताब पढ़ कर ज्ञान पाना और बात है, लेकिन व्यावहारिक ज्ञान..."[36] -इसका प्रमाण है।

सखिया को बच्चन की सही पहचान है। अतः कहती है- "उनसे तीन साल छोटी हूँ और इसी घर में पाली-पोसी गयी हूँ। मैं उन्हें बचपन से जानती हूँ। इसीलिए तो कहती हूँ कि उनको पाकर भी तुमने उन्हें नहीं पाया है।"[37]

वह बच्चन की नस-नस पहचानती है। बच्चन को जानने – मानने वाली, बच्चन परेशान न हो इसलिए पत्र में वह घर के हाल-चाल बताती है किन्तु सत्या के नाम शरद के आनेवाले पत्रों का जिक्र नहीं करती। बच्चन से प्यार और विश्वास ही सखिया के वे गुण जिसके कारण बहुआ बच्चन का सारा भार सखिया को सौंप देती है।

वह दूरदर्शी है। सत्या के कलकत्ते जाने के आग्रह पर कहती है-"...मैनावाली, तुमने गलत राह पकड़ ली है, इतना तो मेरी समझ में अब कुछ-कुछ आने लगा है। यह बात और है कि तुम जिद करके कलकत्ता चली जाओ, पर वह फलेगा नहीं। तुम्हारा इस बार का जाना तुम्हारे लिए और बच्चन भइया के बीच एक दीवार खड़ी करना है है जिसे चाह करे भी तुम बाद में तोड़ नहीं पाओगी। इसे सोच लेना।"[38] सत्या के कलकत्ते चले जाने के बाद बच्चन से उसका यह कहना-"...तुम तो इतना पढ़-लिखे हो, देश-दुनियाँ देखते रहे हो, इतना मुझे समझाना पड़ेगा? अपने स्वभाव को थोड़ा बदलो, मैनावाली को ढील मत दो, घर की दीवारों में कसो, यहीं रहने पर मजबूर करो।"[39] सत्या को न लाने की बच्चन की बात पर कहती है-"मेरे कहने का मतलब यह है कि दुबारा एक बार फिर दिन भिजवा कर उन्हें लिवाने के लिए कलकत्ते जाओ। अगर आ गयीं तो ठीक है और नहीं आयीं तो तुम लोकलाज की जवाब देही से सदा-सदा के लिए बच जाओगे। फिर दोष उधर चला जायेगा।"[40]

सखिया चतुर है। अपने पत्रों के बारे में जानने के लिए सखिया से विशेष मोह माया बताने पर सखिया जान जाती है, लाख कोशिश के बावजूद वह सखिया की थाह नहीं लगा सकती। गौने पर कलकत्ते जाने से पहले सखिया से कहती है-"अपने वकील साहब का ध्यान रखना।"[41] कहने पर सत्या को ताना मारते हुए कहती है-"...जब शरद बाबू का ध्यान रखने तुम कलकत्ता जा रही हो तो वकील साहब का अब मेरे सिवा कौन ध्यान रखेगा!"[42]

सखिया की जिंदगी पकवा मकान को समर्पित है। बच्चन के जेल जाने के बाद सखिया रात में अपने घर जाना छोड़ देती है। ठनठन की पत्नी का बच्चन से कहना कि "...मरने से पहले बहुआ तुम्हें इसी को सौंप गयी है, मैंने अपने कानों से सुना है और सखिया उस लायक है भी। असल बात तो यह है बच्चन, कि इसके बिना न तो यह घर चल सकता है, न तुम चल सकते हो।"[43]

सखिया हिंमती नारी है। सुरेश ने एक बार बाँह पकड़ी थी तो उसने पहली बार ही गाल पर तड़ाक से भरपूर तमाचा जड़ के दोनों हाथों से ढकेल दिया था। एक पाँव उसके तलुए में गुरुखुल होने से वे अपने को सँभाल न सका और जमीन पर टप्प से गिर पड़ा था। बच्चन के यह कहने पर कि तुम्हें देखकर राह-घाट अगर किसी की नीयत खराब हो गयी तो-पर उसका कथन कि "उसका खून सखिया पी जायेगी। आज तक किसी की हिम्मत नहीं पड़ी तो अब किस कुत्ते को मरना लिखा है?"[44] परसने-खिलाने में

सखिया बेहद चतुर है। हर खाने वाले को वह कुछ-न-कुछ अधिक ही खिला देती है। उसमें उदारता भी है। बच्चन उसे चाहता है फिर भी वह उससे कहती है कि "मैनावाली को यहाँ रहने का एक मौका और देना चाहिए।"[45]

सखिया उद्दात और त्यागी है। मैनावाली को वापस बुलाने की बात पर बच्चन द्वारा यह कहने पर मैनावाली राज़ी हो गयी तो तेरा क्या होगा, उसका यह कहना- "तुम्हारे मन को सुख-शांति मिलने के लिए मैं सब कुछ सह सकती हूँ। मैनावाली के यहाँ रहने से तुम्हारे मन का कुछ खोया हुआ अगर मिल जाये तो इससे बढ़कर सुख की बात मेरे लिए और क्या होगी? मेरी चिंता मत करो। मेरी जगह दूसरी है। मैं इस घर की नौकरानी हूँ। तुम्हें पास से देखती रहूँगी, मेरे लिए यही बहुत होगा। चौबीस घण्टों में एक बार भी अगर नेह-छोह से मुझे देख लोगे तो मुझे सब कुछ मिल जायगा।"[46]

सखिया का मानना है कि [47]. "दुनियाँ भोगने के लिए है। उदास रहने वाला मर्द कायर होता है, वह संसार का सुख नहीं भोग पाता।"[48] 2."औरत को सबसे पहले मर्द की देह चाहिये, बाकी जरूरतें उसके बाद सामने आती हैं। इस सुख के लिए संसार का बड़े-से बड़ा सुख वह छोड़ देती है।"[49] 3. "औरत की जात ही तुच्छ होती है।"[50]

सखिया में नारी सहज लज्जा है। लोक-लाज के कारण बच्चन के साथ बाहर नहीं जाती, नौका-विहार की बात पर उसका बच्चन से कहना-"नहीं, नहीं, मुझे घर के भीतर ही रखा करो, दूसरे गाँव के लोग देखेंगे तो क्या कहेंगे![51]

सखिया हाजिरजवाबी है। मैनावाली द्वारा यह कहने पर कि "इतने बड़े फार्म की जो मालकिन बन कर बैठी हो, उसे चिंता किस बात की?"-पर सखिया का यह कहना-"तुमने अपनी गद्दी छोड़ दी तो कोई न कोई उस जगह को भरेगा ही।"50 ठनठन द्वारा दूसरी शादी की बात पर सखिया का सत्या से कहना, "हाँ, तुम्हारी तरह सभी को अपनी देह की भूख पर काबू नहीं पा सकते?"[52]

निष्कर्ष-संक्षेप में 'काली दीवार' उपन्यास की नायिका सखिया गुणों का भंडार है। वह सुंदर, एक निष्ठ समर्पिता, कर्मठ, दूरदर्शी, संवेदनशील, मेल-जोलवाली, मजबूर, व्यावहारिक, चतुर, दूरदर्शी, हिंमती, उद्दात और त्यागी, हाजिरजवाबी एवम् लज्जाशील है। जो कभी-कभी लड़कपन भी कर बैठती है। वह त्यक्ता होकर भी स्वकीया का स्थान पाती है। उसमें एक आदर्श भारतीय नारी के सभी गुण विद्यमान हैं।

संदर्भ-संकेत

1. मिश्र, केशवप्रसाद, काली दीवार, प्रथम संस्करण, स्मृति प्रकाशन, इलाहाबाद,1977, पृ.20-21
2. वही.पृ.289
3. वही.पृ.103
4. वही.
5. वही.पृ.157
6. वही.पृ.202
7. वही.
8. वही.पृ.41
9. वही.पृ.85
10. वही.पृ.136
11. वही.पृ.144
12. वही.पृ.289
13. वही.पृ.236
14. वही.पृ.243
15. वही.पृ.26
16. वही.
17. वही.पृ.157
18. वही.पृ.64
19. वही.
20. वही.पृ.75
21. वही.पृ.220
22. वही.पृ.320
23. वही.पृ.88
24. वही.
25. वही.पृ.93
26. वही.
27. वही.पृ.85

28. वही.पृ.30
29. वही.पृ.136
30. वही.पृ.257
31. वही.पृ.320
32. वही.पृ.105
33. वही.पृ.117
34. वही.
35. वही.पृ.308
36. वही.
37. वही.पृ.157
38. वही.पृ.159
39. वही.पृ.162
40. वही.पृ.203
41. वही.पृ.171
42. वही.पृ.172
43. वही.पृ.237
44. वही.पृ.290
45. वही.पृ.261
46. वही.पृ.262
47. वही.पृ.284
48. वही.
49. वही.
50. वही.पृ.289
51. वही.पृ.301
52. वही.पृ.303